

निबंध

सुख-दुख

प्रो. कल्याणसिंह शेखावत

निबंधकार परिचै

प्रो. कल्याणसिंह शेखावत रौ जलम 7 जुलाई, 1942 नै होयौ। आपरै पिता रौ नांव शिवदयालसिंह हो। आपरी मायड़ भासा राजस्थानी रा रुखाळा, उण रा हिमायती अर उणनै पोखण री तजबीज करणवाळा प्रो. शेखावत पंदरै पोथ्यां रौ लेखन अर संपादन कर्यौ। जोधपुर विश्वविद्यालय में राजस्थानी विभाग री थरपणा अर रुखाळ रौ जस प्रो. शेखावत नै जावै।

आप राजस्थानी भासा, साहित्य अर संस्कृति नैं सरल सबदां रौ बागौ पैरायनै पाठक-समाज नैं सूपियौ। साहित्य रै इतिहास री गैरी कूंत अर संस्कृति रौ ओपतौ ओछाड़ ओढायौ। आपरी सिरजण ऊरमा अर विद्वता रै पाण केई सम्मान आपनै मिल्या। केई विश्वविद्यालयां मांय आप पाठ्यक्रम मंडळ रा संयोजक अर सदस्य रैया। आप केई राष्ट्रीय अर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियां में भाग लियौ अर संगोष्ठियां रौ आयोजन ई कर्यौ। मीरां बाई रै व्यक्तित्व अर कृतित्व नै लेयनै आप साहित्यिक कूंत करी। निबंध रचना री पोथी 'मणिमाळ' मानवी भावां री पारख अर अंवेर करै।

पाठ परिचै

निबंध गद्य री कसौटी मानीजै। राजस्थानी रै मांय निबन्ध-लेखन री परंपरा आधुनिक गद्य विधा सूं आई। दूजी भासावां री गद्य विधावां जियां राजस्थानी में आजादी रै पैलै सूं ई केई वरणनात्मक, भावनात्मक, घटनात्मक अर आत्मकथात्मक निबन्ध लिखीजता रैया है। सामाजिक, सांस्कृतिक अर राजनीतिक तौ केई व्यंग्यात्मक निबंध लेखन री परंपरा अठै रैया है। कोई अेक विसय, घटना कै भावां रै सागर में डूब 'र लेखक आपरै विचारां नैं सबदां रै ओळै-दोळै गूथै अर समाज नैं नूवी दीठ अर नूवी सोच देवण रा जतन करै। भासा अर भाव रा संजोग नैं लेयनै पोथी 'मणिमाळ' रा निबंध ई राजस्थानी गद्य-साहित्य री विसेसतावां साथै खरा उतरै। 'सुख-दुख' निबंध भावनात्मक निबंधां री पोथी 'मणिमाळ' सूं लिरीज्यौ है। औ निबंध प्रो. कल्याणसिंह शेखावत रै निबन्ध-संग्रै 'मणिमाळ' सूं लिरीज्यौ है। इण पोथी में मनगत भावां अर अंतस रौ गैरौ आध्यात्मिक चिंतन निजर आवै। आप जीव-जगत, मोह, माया, सपनौ, रीस, ईसकौ, हरख, हेत, डर, भूख, आत्मा, धरम, मौत अर सुख-दुख जैड़ा विसयां नैं लेयनै निबन्धां री रचना करी है। सुख-दुख मानवी भाव ई है, जिकौ मिनख री दसावां साथै ऊपजै। भौतिक सुख, आत्मिक सुख या आध्यात्मिक सुख दो न्यारा रूप है। मरजी रौ काम बणतौ जावै, सगळी थितियां अर बगत मिनख रौ साथ देवता जावै तौ उणसूं सुख रौ अनुभव होवै। थितियां अर बगत साथ नौ देवै, जिकौ चावै वौ काम पूरौ नौ होवै, इच्छावां पूरी नौ होवै तौ उणसूं दुख ऊपजै। इच्छावां रौ पूरौ होवणौ सुख है। आ बात ई खरी है कै हरेक मिनख रै वास्तै सुख अर दुख रा नांव, रूप अर म्यांन न्यारा-न्यारा होवै। परम सुख में आनंद है अर आनंद आध्यात्मिक सुख सूं आवै। सुख-दुख तौ भौतिक अर नासवान देही री भावनात्मक अवस्थावां है। ढळती-उतरती छियां रै ज्यू जीवण में सुख-दुख आवता-जावता रैवै। कोई मिनख हरमेस सुखी नौ रैय सकै अर नौ दुखी रैय सकै। जीवण रै साथै ज्यू मौत ई आवैला। सांत चित्त में कणैई रीस ई अवस आवैला, सूरज ऊगै तौ वौ आथमै ई है। रात रै पछै दिन अर दिन रै पछै

रात आवै। बगत बदळतौ रैवै। जीवन में बदळाव आवै अवस। किणी रौ ई जीवन अेक जैडौ नीं रैय सकै। उणीज भांत जीवन में सुख-दुख ई आवै। इच्छावां रौ तिरपत रूप सुख है अर सुखां री इच्छा राखणी ही दुखां रौ मूळ है। लेखक मानवी दसावां माथै सगळी बातां रौ खुलासौ करण री खेचळ करी है। देह रा हाव-भाव सूं हियै रा भाव प्रगटीजै।

राजस्थानी रौ औ दूहौ जिणमें कवि भौतिक सुखां रौ वरणाव इण भांत करै—

गो-धन, गज-धन, बाजि-धन, और रतन धन खान।

जब आवे संतोष धन, (तो) सब धन धूरि समान॥

तौ दूजै कानी कवि बांकीदासजी पूरण सुख इण भांत बतावै—

ज्यांरै खाक बिछावणौ, ओढण नै आकास।

ब्रह्म पोख संतोस वित्त, पूरण सुख त्यां पास॥

हाथी, घोड़ा, रथ अर रतन भण्डार दिन-दिन बधता जावै तौ ई बिना संतोस करियां सुख नीं मिळै अर जिणरै कनै कीं कोनी, वौ ई जे संतोस नै धारण करलै तौ पूरण सुख मिळ जावै। बात कैवण में साव छोटी लागै कै 'संतोसी सदा सुखी' पण काई आपां संतोस राखां? काई सुखी रैवण रा असल साधनां नै अपणायनै दुखां नै मिटावण रा जतन करां? काई सुख-दुख नै आपां खुद ई न्यूत बुलावां कोनी? अैड़ा घणाई सवालां रा पडूतर इण निबंध नै पढनै समझण सूं मिळैला। आपणा धरम-ग्रंथां— वेद-सास्त्रां, गीता, रामचरितमानस, बडा-बडा विद्वान, सन्त, साहित्यकारां सुख-दुख नै लेयनै जिका भाव राख्या, उणां रा रूपाळा दाखला देतां थकां लेखक आपरी बात राखी है। इण निबंध में च्यारूंमेर देख्योडौ, भोग्योडौ साच इधकी परिभासावां साथै उजागर करीज्यौ है। निबंध री भासा सरलता अर सहजता लियोडी है। उक्तियां साथै छोटा-छोटा वाक्यां में आपरी बात कैवणी, अेक वाक्य रै साथै दूजै वाक्य रौ जुड़ाव, केई ठौड़ां काव्यमय अभिव्यक्ति, जनमानस में परोटीजै जैड़ा सबदां रौ प्रयोग सरलता सूं गैरी बात नै समझावण री खिमता इण निबंध री विसेसतावां है। हरेक बार नूवै ढाळै आपरी बात कैवण री कळा राखणी, आ निबंधकार री इधकाई है। सब सूं मोटी बात कै सुख अर दुख रौ कोई अेक सरूप कोनी। औ निबंध आखरां रूपी मणियां नै पोयनै 'दुलड़ी' (सुख-दुख) री अमोलक माळा ज्यूं पाठकां रै हिवडै हिलोळा लेवै अर नूवै मारग री सोझी देवै।

सुख-दुख

संचय रौ भाव ही दुख रौ मूळ है अर त्याग सूं सुख-सांति मिळै। श्रीमद्भागवत गीता में भगवान वासुदेव कैयौ है— 'त्यागाच्छानिरुत्तरम् (12/12) त्याग सूं इज तुरंत परम सांति मिळै।

सुख री आसक्ति छूटण सूं ही सै दुखां रौ कळेस मिट जावै अर आणंद मिळै। जिका संसारी सुख प्राणी नै दीसै, वै सै दुख री ही जड़ है। सुख री कामना ही दुख है। जे सुख री इच्छा ही नीं हुवै तौ दुख उपजै कठै सूं? सुख अर दुख रौ जोड़ै है, पण दोनूं सदा रैवण वाळा कोनी। ज्यूं धूप अर छाया आता-जाता रैवै— कदैई चढै तौ कदैई ढळ जावै। इणी भांत सुख अर दुख भी आवै अर चल्या जावै। इण खातर न सुख में घणौ राजी होवणौ अर न दुख में निरास। संतवाणी रा बोल इणी भाव नै दरसावता कैवै—

देह धरै रा दंड है, सब कोऊ को होय।

ज्ञानी भुगतै ज्ञान से, मूरख भुगतै रोय॥

चाणक्य नीति मुजब—

क्रोधौ वैवस्वतौ राजा, तृष्णा वैतरणी नदी ।

विद्या कामदुधा धेनुः, सन्तोषी नंदन वनम् ।।

रीस जमराज ही है। इच्छावां वैतरणी जैड़ी विसाल नदी है, विद्या कामधेनु समान है अर संतोस नंदनवन ज्यूं सुखदाई है। सुख अर दुख प्राणी रै मन रा भाव है। यूं तौ सै प्राणी सुख-दुख री अनुभूति करै, पण मानखैं में अै भाव कीं इधका है अर आं भावां नै समझावण री वाणी भी उणरै कन्नै है जिकी दूजा प्राण्यां कन्नै कोनी ! जिकी बातां अर कारज मनुज रै मन नैं भणण वाळा या लुभावण वाळा है, वांसूं उणरै मन में सुख उपजै। किण बात अर काम सूं कित्तौ सुख उपजै औ बतावणौ घणौ दोरौ है, पण मिनख रा हाव-भाव, हास-विलास नैं देखनै इणरौ कीं अंदाजौ अवस लगायौ जा सकै है। हरेक मानवी सुखी रैवणौ चावै, पण सुख सदा रैवै कोनी— इणरौ कांई कारण है ? गुणीजन सुख-दुख रौ संबंध उणरौ पूरबला अर अबार रा करमां सूं जोड़ै। आछा करम सुख देवै अर बुरा करमां सूं दुखां रौ कळेस भुगतणौ पड़ै।

सुख री अनुभूति भी न्यारी-न्यारी होवै। काया रौ सुख न्यारौ है अर मन, बुद्धि अर आत्मा रौ सुख दूजौ है। आछौ खावण-पीवण, आछा कपड़ा अर रैण-सैण सूं काया नैं सुख मिळै पण मन, बुद्धि अर आत्मा उणनैं सुख नीं समझै। भगत नैं ईस नैं भजियां सूं ही सुख मिळै। चिंतक अर साधक रौ सुख बुद्धि सूं संबंध राखै अर मन विसय-वासना सूं सुखी होवै। साधु-सन्त सदआचरण सूं सुख री अनुभूति करै। उणां नैं मदिरापान सूं सुख री जागां दुख री अनुभूति होवै। संसार बोल-बतळावण सूं सुखी होवै पण साधक मौन धारण सूं। इण जग में सुख रा कारण भी भांत-भांत रा है। गरीब अपार धन मिलण सूं, निपूतौ पूत मिलण सूं, कुंवारी ब्यांव होवण सूं, रोगी निरोगा होयां सूं, वकील मुकदमौ जीतण सूं सुखी होवै, पण भगत भगवान मिलण सूं, विग्यानी नयौ आविस्कार करण सूं, धरमी परोपकार, चांडाळ पापाचार कर राजी होवै। वौ ही उणां रै सुख रौ आधार बणै। कीड़ी कण सूं राजी होवै अर हाथी मण सूं। संत कबीर रा सबदां में—

सुखिया सब संसार है, खावै अरु सोवै।

दुखिया दास कबीर है, जागै अरु रोवै।।

ओ सुख अग्यानता रौ है जिण सूं संसारी सुखी रैवै, पण ग्यानी ग्यान री जोत नैं देख्यां पछै दुखी रैवै। जिकौ मनुज जय-पराजय, लाभ-हाण अर सुख-दुख नै अेक समझ रै करम करै बो सच्चौ साधक बाजै, पण औ काम हरेक संसारी रै बस रौ कोनी

श्रुति री मानता है कै 'यो वै भूमा तत् सुखं नाल्पे सुखमस्ति'। इणरौ मतळब औ कै थोड़ा में सुख कोनी, जिकौ भूमा है पूरौ है— वौ ही सुख है। औ सुख भगवत मिलण रौ है। ग्यानी कैवै— अग्यानी मनुज संसारी संबंधां, धन-संपदा, माया-मोह नैं ही सुख मान लेवै जिकौ असल में दुख रौ मूळ है— भ्रम है। औ जगत तौ अपूर्ण अर सदा नीं रैवण वाळौ है, पण प्रभु तौ पूरण अर सदा रैवण वाळा है। ग्यान अर सतसंग रै बिना औ अंधारौ मिटै कोनी, जिण सूं मानवी, झूठा संसारी सुख नैं ही साचौ मान भगवान री भगती रा सुख कानी लागै कोनी। ब्रह्म नै पावण सूं मिलण वाळौ सुख ही साचौ, हमेस रैवण वाळौ अर आणंद देवण वाळौ है।

धरम री धारणा है कै भगत अर ग्यानी सदा सुखी रैवै।

त्याग सूं प्रेम, प्रेम सूं सुख अर सुख सूं सांति रौ जलम होवै। हेत रौ आधार है त्याग अर उणनै समूळ खतम करण वाळौ है स्वारथ। अनुभूत साच औ ही है कै जटै प्रेम है बटै ही सुख है अर जिण जगां सुख है सांति भी उण ठौड़ है। सुख मीठा बोलां सूं भी मिळै, इण खातर ही तुलसीदासजी कैयौ है—

'तुलसी' मीठे बचन तें, सुख उपजत चहुं ओर।

वसीकरन यह मंत्र है, परिहरू बचन कठोर।।

मीठा बोल बोलनै जद किणी नैं बस में कर्यौ जाय सकै है तौ कठोर वचन क्यूं बोलणा ?

स्वीडिस कहावत है कै— बांट लेवण सूं सुख दुगणौ व्है अर दुख आधौ। इण खातर सुख अर दुखां नै बांट लेवणा चाइजै। आपां दूजां नैं सुख देयनै ही सुखी रैय सकां हां। ओरां नैं दुख देयनै आपां सुखी नीं रैय सकां। सुख रौ भरपूर आणंद लेवण खातर उणनैं बांटणौ जरूरी है।

सुख रै पछै दुख अर दुख रै पछै सुख आवै। औ विधि रौ विधान है—

सुख बीते दुख होत है, दुख बीते सुख होत।

दिवस गये निसि उदित, निसिगत दिवस उदोत।।

बुराई सूं सुख घटै अर दुख बधै—

करै बुराई सुख चहै, कैसे पावे कोय।

बोवै पेड़ बबूल का, आम कहाँ ते होय।।

सुख री पिछाण है खुली हंसी अर छिपी मुस्कान। सुखी वौ कोनी जिणरै कन्नै सो-कीं है—पण जिणरै कन्नै जिकौ है उण सूं तुस्त रैवण वाळौ ही सुखी है। इण तै संतोस रौ दूजौ नांव ही सुख है। म्हारै कन्नै कांई है—इणसूं सुख नीं मिळै, पण जिकौ है उण सूं राजी अर तुस्त रैवणौ ही सुख है। ईमानदारी भी सुख देवण वाळी है।

धन सूं सुख खरीद्यों नीं जा सकै, फगत आपां मन रौ रंजण खरीद सकां हां। सुख रौ भोग भोगणौ जटां तांई दोरौ है जद तांई कै आपां उणनैं पैदा नीं करां।

दुख भी प्राणी रै हीयै री पीड़ सूं उपजै। है तौ औ मन अर हीयै रौ भाव, पण इणरौ सबसूं बेसी असर काया पर पड़ै।

दुख दो तरै रा होवै— अेक काया रौ अर दूजौ हीयै रौ। किणी तरै री विपदा जिणमें काळ पड़णौ, बाढ अर तूफान आवणौ, आग लागणी, अकाळ मौतां होवणी, भूचाळ आवणौ, बीजळी पड़ै, लावौ निकळै जैड़ा संकट आवै तद मिनख ही नीं आखौ प्राणी जगत दुखी होवै, तद प्राणी री काया अर मन हीयै नै पीड़ झेलणी पड़ै।

चिंता दुख रौ भारौ है। डर सूं भी दुख उपजै। दुख रा दिन लांबा अर सुख रा दिन छोटा हुया करै। दुख रौ अेक पल भी अेक जुग रै बरोबर लागै, पण सुख री छियां ढळतां कीं जेज नीं लागै। बीत्योड़ा दुखां नैं कदैई याद नीं करणा चाइजै।

दुखां री सरुआत आखरां सूं व्है। बळता खीरा सो अेक-अेक आखर मन अर तन दोनुवां नैं झुळसा देवै। सुख री लालसा दुख रौ ही अेक रूप है। जिण कदैई दुख नीं देख्यौ, वौ सब सूं बडौ दुखी है। दुख रौ अेक कारण करजौ भी मानीज्यौ है। इण खातर मिनख नैं जे सुखी रैवणौ होवै तौ करज लेवण सूं बचणौ चाइजै।

देह रा इण दुख सूं हीयै रौ दुख घणौ दुखदाई होवै। गाळी-गळौज करण, तानौ मारण, स्राप-दुरासीस देवण, चिड़ावण, मान घटावण, नीचौ दिखावण, निंदा, बदनामी अर चुगली करण, बात नैं बार-बार काटण, ठगी अर चोरी करण, बिना कारण सतावण, घात करण, जमीन, जोरू, धन-संपदा अर घर दबावण, दियोड़ी वसत नैं खावण री नियत करण, बणता काम अर बधोतरी में रोड़ौ अटकावण, मां, भाण, बेटी अर लुगाई नैं बुरी निजर सूं देखण, धरम, देवी-देवता, आस्था विस्वास, मानीता सत्पुरुसां, लोकनायकां, वीरां, धीरां खातर ओछा बोल बोलण वाळा या बुराई करण वाळां सारू मानवी मन में दुख री झाळ उठ्यां बिना नीं रैवै। मन, वाणी, सरीर अर करम सूं दुख अर सुख उपजै।

भगवान मनु कैवै— जिकौ बारली जिनसां रै अधीन है, वौ सगळौ दुख है अर जिकौ आपणै अधिकार में है, वौ सुख है।

भोग सूं बैर-भाव पनपै अर बैर सूं दुख रौ जलम हुवै जिणसूं असांति फैलै। भोगी मिनख भोग कानी ही

आसक्ति राखै अर जिकौ उणरै भोग में बाधक बणै उणसूं बैर राखै— बैर-भाव सूं दुख अर दुख सूं आसक्ति, औ चक्कर चालतौ ही रैवै।

इण संसारी दुख सूं दुखी मनुज करतार री सरण लेवै, पण भगतां अर संतां रौ कैवणौ है—

दुख में सुमिरन सब करै, सुख में करै न कोय।

जे सुख में सुमिरन करै, दुख काहै को होय॥

जटै त्रस्या, राग, द्वेष अर ईरखा है, बटै सुख कटै? दुख अर सुख में समभाव राखण वाळौ मनुज जोगी पुरुसोत्तम मानीज्यौ है।

धरम दुख नैं समूळ खतम करण खातर परम सुखदायक परमात्मा री सरण में जावण री बात कैवै। भगत रौ दुख भगवान मिल्यां सूं ही मिटै अर दुख में ही प्रभु याद आवै। सुख में मिनख भगवान नैं याद ही नैं करै। दुख क्यूं जलमै? उण रा कारण अर हेतु काई है? इण बात पर विचार करां तौ लखावै कै यूं तौ दुख रा घणकरा कारण है, पण मूळ कारण है आपणी मनचींती नैं होवण सूं दुख उपजै। मिनख सोचै कीं है अर होय जावै कीं, तद दुख होवै।

समाज में मान घटणौ भी दारुण दुख रौ कारण है। विसय भोग कानी राग दुख रौ मूळ बणै। गरीबी अर करजदार होवणौ दुख उपजावण वाळा दो सीगा है।

दुख पूरबला करमां रौ फळ भी मानीजै। भगवान भी जद मानवी देह धारण करै तद वानै भी काया रा औ दुख भोगणा ही पड़ै।

दुख रौ कारण मोह अर आसक्ति भी है। औ म्हारौ है। म्हारौ इणरै साथै संबंध है— मां, बाप, भाई, भाण, बेटी-बेटौ, दादा-दादी, नाना-नानी, मामा-मामी, साळी-साळौ-बैनोई, नणदोई न जाणै कित्ता संसारी रिस्ता-नाता है जिकां रै मोह बंधण सूं औ मानवी बंध्योड़ौ है।

दुख रौ कारण अग्यान है, क्यूं कै सुख-दुख तौ धिरती-फिरती छियां है। जटै सुख है बटै दुख आवणौ ही है। इण जग में सुख कमती अर दुख बेसी रैवै। दुखां रौ सोच न करणौ ही दुखां सूं मुगती रौ मारग है। दुख नैं हंस नै काटे वौ ही सुखी रैय सकै। महाभारत में छह तरे रा दुखियां रौ खुलासौ करतां कहीज्यौ है कै दूजां सूं ईरखा राखण वाळौ, धिरणा करण वाळौ, असंतोसी, रीसाळू संका करणहार, परधन सूं जीवण वाळौ— औ छह संसारी दुखी है।

ॐॐ

अबखा सबदां रा अरथ

आसक्ति=लगाव, प्रेम। कळेस=भावां रौ द्वंद्व, पीड़ या दुख रौ दरद। दण्ड=यातना, दुख। नंदनवन=सदा सुख देवण वाळी सरस सजीवनता। रीस=किरोध, गुस्सौ, झाल। मुस्कान=मुळक, मधरी हंसी। मनचींती=मन री इच्छा, मन में सोच्योड़ौ। ईरसा=ईरस्या, ईद। देह धरैका— देहधारियां रा।

सवाल

विकळपाऊ पड़ुत्तर वाळा सवाल

1. 'मणिमाळ' किण विधा री पोथी है?

- | | |
|--------------|----------------|
| (अ) निबंध री | (ब) कहाणी री |
| (स) नाटक री | (द) संस्मरण री |

()

2. 'सुख-दुख' निबंध रा रचयिता रौ नांव—

- (अ) डॉ. गजादान चारण (ब) डॉ. मनोज स्वामी
(स) रवि पुरोहित (द) प्रो. कल्याणसिंह शेखावत

()

3. 'सुख-दुख' निबंध रौ रूप है—

- (अ) वरणात्मक (ब) राजनीतिक
(स) भावनात्मक (द) आं मांय सूं अेक ई कोनी

()

4. 'सुखिया सब संसार है' तौ दुखी कुण है ?

- (अ) तुलसीदास (ब) कबीर
(स) सूरदास (द) रसखान

()

5. दुख रौ मूळ कारण है—

- (अ) संचय रौ भाव (ब) बैर रौ भाव
(स) त्याग रौ भाव (द) संतोस रौ भाव

()

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'देह धरै रा दण्ड है सब कोऊ को होय' ओळी रौ भाव लिखौ।
2. इच्छावां किण नदी जितरी विसाल है ?
3. स्वीडिस कहावत रौ म्यानौ देवौ।
4. सुख किण सूं मिळ सकै ?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. आदमी नैं सुख अर दुख क्यूं भोगणा पड़ै ?
2. 'संतोसी सदा सुखी' लेखक क्यूं कैवै ?
3. मनु कांई कैवै ? इण निबंध मांय सूं लिखौ।
4. कांई धन सूं सुख मोलायौ जाय सकै ? इण विसय में दो ओळ्यां मांडौ।
5. 'भोग सूं बैर-भाव पनपै।' इणरौ कांई कारण है अर बैर-भाव सूं कांई मिळै ?

बडा पडूत्तर वाळा सवाल

1. सुख-दुख जैड़ा भावां नैं लेयनै निबंध लिखण रै लारै लेखक रौ मूळ ध्येय कांई रैयौ होवैला ? आपरा विचारां में खुलासौ करौ।
2. सुख-दुख निबंध रौ सार आपरा सबदां में लिखौ।
3. लोक मानता रै मुजब सुख पुण्य सूं अर दुख पाप सूं मिळै। इण कथन रौ खुलासौ करौ।
4. धरम ग्रंथां अर संत-भक्त कवियां सुख-दुख रै वास्तै आपरा कांई-कांई विचार राख्या है। इणरौ वरणाव दूहां रा दाखलां सागै करौ।

नीचै दिरीज्या गद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. सुख री पिछाण है खुली हंसी अर छिपी मुस्कान। सुखी वौ कोनी जिणरै कन्नै सो-कीं है—पण जिणरै कन्नै जिकौ है उण सूं तुस्त रैवण वाळौ ही सुखी है। इण तरै संतोस रौ दूजौ नांव ही सुख है। म्हारै कन्नै कांई है—इणसूं सुख नीं मिळै, पण जिकौ है उण सूं राजी अर तुस्त रैवणौ ही सुख है। ईमानदारी भी सुख देवण वाळी है।
2. दुखां री सरुआत आखरां सूं व्है। बळता खीरा सो अेक-अेक आखर मन अर तन दोनुवां नैं झुळसा देवै। सुख री लालसा दुख रौ ही अेक रूप है। जिण कदैई दुख नीं देख्यौ, वौ सब सूं बडौ दुखी है। दुख रौ अेक कारण करजौ भी मानीज्यौ है। इण खातर मिनख नैं जे सुखी रैवणौ होवै तौ करज लेवण सूं बचणौ चाईजै।
3. धरम दुख नैं समूळ खतम करण खातर परम सुखदायक परमात्मा री सरण में जावण री बात कैवै। भगत रौ दुख भगवान मिल्यां सूं ही मिटै अर दुख में ही प्रभु याद आवै। सुख में मिनख भगवान नैं याद ही नीं करै। दुख क्यूं जलमै ? उण रा कारण अर हेतु कांई है ? इण बात पर विचार करां तौ लखावै कै यूं तौ दुख रा घणकरा कारण है, पण मूळ कारण है आपणी मनचींती नीं होवण सूं दुख उपजै। मिनख सोचै कीं है अर होय जावै कीं, तद दुख होवै।
4. दुख रौ कारण अग्यान है, क्यूं कै सुख-दुख तौ घिरती-फिरती छियां है। जटै सुख है बटै दुख आवणौ ही है। इण जग में सुख कमती अर दुख बेसी रैवै। दुखां रौ सोच न करणौ ही दुखां सूं मुगती रौ मारग है। दुख नैं हंस नै काटै वौ ही सुखी रैय सकै। महाभारत में छह तरै रा दुखियां रौ खुलासौ करतां कहीज्यौ है कै दूजां सूं ईरखा राखण वाळौ, घिरणा करण वाळौ, असंतोसी, रीसाळू संका करणहार, परधन सूं जीवण वाळौ— अै छह संसारी दुखी है।